https://kalaasamiksha.in/
Kalaa Samiksha - Volume 01, No 08, PP 273-304 Nov. 2025 (Total PP 32)
ISSN : 3107- 4936(Online)
Frequency – Monthly

3. FOLK AND TRIBAL ARTS AND LITERATURE STEEPED IN INDIAN TRADITION (भारतीय परम्परा से आवृत्त लोक एवं जनजातीय कलाएं और साहित्य)

Kavita Yadav[a]*

[a] Research Scholar, M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly

[a]Email: kvyadav1993@gmail.com

Abstract

Indian folk and tribal arts and literature are an integral part of India's rich cultural heritage and reflect the country's invaluable culture. These arts and literature express diverse aspects of Indian society and offer glimpses into various regional cultures. This heritage symbolizes creativity, prosperity, and social unity in villages and tribal communities. Indian folk and tribal art represents diversity and uniqueness across different regions, inspired by the country's varied geographical and cultural landscapes. This heritage includes folk music, folk tales, folk dances, folk art, and tribal arts. These forms have evolved in different regions and are a significant part of the cultural identity of the tribes residing there. Through these art forms, local history, traditions, and cultural nuances are presented. The nature of Indian folk art as a cultural heritage reflects its endless diversity, richness, and creativity, and it is considered a vibrant social and cultural legacy. Folk and tribal art reflects the integral aspects of life and culture in Indian society, expressing people's emotions, social relationships, and customs. Indian folk and tribal art preserves India's culture by incorporating various regional embellishments, costumes, songs, dances, musical instruments, dramatic performances, stories, folk tales, and other theatrical arts. It presents its ancient and social values with excellence. Through this, people understand the uniqueness of their language, literature, music, and dance, and are able to carry forward their folk traditions. In this way, Indian folk art fosters prosperity, social harmony, and cultural enrichment.

भारतीय लोककला एवं जनजातीय कलाएं एवं साहित्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अहम हिस्सा है, और यह देश की अमूल्य संस्कृति को दर्शाता है। ये कलाएं और साहित्य भारतीय समाज के विविध पहलुओं को अभिव्यक्त करती है। और विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियो की झलक प्रस्तुत करती है। यह विरासत गांवो और जनजातियो मे सृजनात्मकता, समृध्दि, और सामाजिक एकता का प्रतीक है। भारतीय लोक एवं जनजातीय कला विभिन्न क्षेत्रो मे विविधता और अव्दितीयता का प्रतीक है, जो देश के विविध भौगोलिक और सांस्कृतिक परिदृश्यों से प्रेरित है। इस विरासत में लोक संगीत, लोक कथाये, लोक नृत्य, लोक कलायें, और लोक वाणी जनजातीय कलायें शामिल है। ये विभिन्न क्षेत्रो मे विकसित होते है, और वहां की जनजातियों की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इन रूपो मे कला के माध्यम से स्थानीय, इतिहास, परंपरायें और सांस्कृतिक अंदरूनिता को प्रस्तुत किया गया है। भारतीय लोककला सांस्कृतिक विरासत का स्वरूप उसकी अनन्त विविधता समृध्दि और रचनात्मकता को दर्शाता है, और इसे एक सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन्त विरासत के रूप में माना जाता है। लोककला एवं जनजातीय कला भारतीय समाज के जीवन और संस्कृति के अभिन्न हिस्से का प्रतिबिम्ब करती है, और लोगो की भावनाओ, सामाजिक सम्बन्धों और रूढिवादो को प्रकट करती है। भारतीय लोककला एवं जनजातीय कला मे विभिन्न प्रान्तीय अलंकरण, परिधान,गीत नृत्य, नृत्य वाद्य, नृत्य अभिनय, कथा, लोक कथायें लोककला अन्य रंगमंच की कला को शामिल करके भारत की सांस्कृति को संजोये रखती है। यह अपने प्राचीन व सामाजिक मूल्यों को उत्कृष्टता के साथ प्रस्तुत करती है, इसके माध्यम से समाज के लोग अपनी भाषा, साहित्य, संगीत और नृत्य की अव्दितीयता को समझते है, और अपनी लोक परंपराओ को आगे बढाने में सक्षम होते है। इस प्रकार भारतीय लोककला समृध्दि सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक अभिवृद्धि का आदान-प्रदान करती है।

Keywords: Folk art, Indian identity, tribal art, literature, cultural heritage, society and rural people, tradition, the nature of heritage, etc.

लोककला, भारतीयता, जनजातीय कला, साहित्य, सांस्कृतिक विरासत, समाज व ग्रामीण जनता, परंपरा, विरासत का स्वरूप आदि ।

---

* Corresponding author.

प्रस्तावना

भारत को लम्बे समय से एक ऐसे स्थान के रूप मे पहचाना जाता है जहां पारंपरिक लोक कलाऐ एवं जनजातीय कलाऐ अपनी पारंपरिक शक्ति और संस्कृति का प्रदर्शन करते है। भारतीय लोक कला और आदिवासी कलाऐ अत्यंत जटिल और सरल है, फिर भी राष्ट्र की समृद्ध परंपराओ को प्रतिविम्बित करने के लिए रंगीन और जीवंत है। आम इंसान के व्दारा बिना किसी ताम झाम व प्रदर्शन से जब स्वभाविक कलाकारी को चित्र, संगीत, नृत्य, काव्य आदि के रूप में पेश किया जाता है, तो वह लोककला कहलाती है। लोककला की अवधारणा, स्पष्ट रुप से 19वीं सदी की है, जो आज भी यह कायम है, यह पूर्व औधोगिक समाज के लिए पुरानी यादों की झलक है। कलाओं का जन्म मानव जीवन के साथ जुड़ा हुआ माना जाता है, चाहे वो आदिवासी कला हो या लोक कला, ये सदैव ही मनुष्य के जीवन का एक प्रमुख अंग बनी रही है। लोककला का जन्म साहित्य के साथ हुआ है। ऐसा कहा जाता है, कि वैदिक युग की दो भाषाये एक संस्कृत जो मुख्य भाषा थी, पढ़ें- लिखे लोगो की भाषा थी, दूसरी अपभ्रंश तथा प्राकृत भाषा, जो लोक समाज मे बोली जाती थी। यही से धीरे-धीरे लोककला की शुरूआत और विकास शुरू होता है।

डा. हजारी प्रसाद व्दिवेदी - - -लोक शब्दो का अर्थ जनपद अथवा ग्राम नही है, बल्कि नगरों और गावों मे फैली हुयी व समूची जनता है, जिसके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोंथिया नही है, ये लोग अकृत्रिम और सरल जीवन व्यतीत करते है।

एम. सी. वर्किट --- किसी राष्ट्र अथवा जाति की सभ्यता के विषय मे पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने हेतु कला से सहायता प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक होता है, क्योकि इसी से रीति-रिवाज, रहन-सहन के ढंग को भलि भांति जाना जा सकता है।

भारत मे पृथ्वी को धरती माता कहकर पूजा जाता है। परन्तु मातृभूमि तो इसका परिमार्जित एवं सांस्कृतिक रूप है। धारती माता के प्रति भक्ति भावना को व्यक्त करने के लिये भिन्न-भिन्न प्रान्तो मे अलग- अलग नाम से धरती का श्रृंगार तथा अलंकरण किया जाता है, जैसे गुजरात मे साथिया, राजस्थान मे माण्डना, महाराष्ट्र मे रंगोली, उत्तर प्रदेश मे चौक पूरना आदि लोक कला का ही रूप है। भारत मे लोककला को दो रूपो मे बांटा जाता है। एक मूर्त लोककला, जिसमे उन वस्तुओ को शामिल किया जाता है, जो ऐतिहासिक रूप से पारंपरिक समुदाय के भीतर तैयार व उपयोग की जाती है। और दूसरा अमूर्त लोककला, जिसमे संगीत और कला दीर्घाए, नृत्य और कथा संरचनाए जैसे रूप को शामिल किया जाता है। भारतीय लोककला उस विविधतावादी और समृध्द सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करती है। जो भारत के विभिन्न क्षेत्रो और जातियो मे पायी जाती है। यह कला और विरासत भारत के लोगो के जीवन विचार और सम्प्रेषण का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

भारतीय लोककला के कई रुप है, जिनमे संगीत, नृत्य, कथा, नाटक और शिल्प विधा शामिल है। यह विभिन्न समुदायों के लोकपरंपराओ, धार्मिक, आदर्शों और स्थानिय सामाजिक आधारो का प्रतिनिधित्व करती है।

भारतीय लोक संगीत—

इसमे बादशाही भजन, गाथा, लोकगीत, कव्वाली, ठुमरी, ख्याल, रागिनी, भोपा, बौल राई और मन्द संगीत समाहित है। यह विभिन्न अवाज, विभिन्न प्रकार की भावनाओ ताल और इंस्ट्रुमेंट का उपयोग करते और अनुभवो को व्यक्त करती है।

भारतीय लोक नृत्य — भारतीय लोकनृत्य में भी विविधता के दर्शन होते है। उत्तर भारतीय कथक, दक्षिण भारतीय भरतनाट्यम, केरल के कथकली, पंजाबी गिद्दा और अन्य राज्यों के लोकनृत्यों को शामिल करती है। इन शैलियो मे अभिव्यक्ति संगीत और रंगमंच का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

भारतीय लोककला - भारतीय लोककला मे कला और शिल्पविधा का भी महत्वपूर्ण स्थान है। यह चित्रकला, मूर्तिकला, तांत्रिककला और वास्तुकला जैसी शैलियों को खुद मे शामिल करती है। ये कलायें अपने समुदायो और स्थानिय परंपराओ को दर्शाती है। और उनकी विविधता एवं समृध्दि को प्रस्तुत करती है।

भारतीय लोककला अपने विविधता समृध्दता और रंगीनता के लिये मशहूर है, यह दुनिया भर मे लोगो को प्रभावित करती है। इसके माध्यम से लोग अपने संगीत नृत्य और कला एवं अपनी भावनाओ भावो और धार्मिक आदर्शो को व्यक्त करते है, और समाज में एकता और सहयोग की भावना को बढावा देते है।

भारतीय लोककला सांस्कृतिक विरासत का स्वरुप है। इसकी प्रविधि बहु प्राचीन है। क्योंकि यह भारत के विभिन्न क्षेत्रो जनजातियो और समुदायो की विविधता और समृध्दता का प्रतिनिधित्व करती है। इसमे ऐतिहासिक विवरणात्मक प्रविधि के व्दारा जानकारी प्राप्त की जाती है। भारतीय लोककला की चर्चा सांस्कृतिक संरक्षण की दिशा में होती है। जिसमे समुदायो को अपनी परंपराये और विरासत की महत्वता को समझने का प्रयास किया जाता है। यह सांस्कृतिक विरासत को बचाने और प्रोत्साहित करने मे मदद करता है। भारतीय लोककला की चर्चा समाजिक एकता की दिशा मे भी होती है। यह लोगो को उनके सांस्कृतिक विरासत के साथ जोडती है, और समाजिक सहयोग एवं एकजुटता को बढावा देती है।

https://kalaasamiksha.in/
Kalaa Samiksha - Volume 01, No 08, PP 273-304 Nov. 2025 (Total PP 32)
ISSN : 3107- 4936(Online)
Frequency – Monthly

भारतीय लोककला सांस्कृतिक अत्मनिर्भरता को दिशा प्रदान करती है, यह लोगो को अपने स्थानीय शिल्पकला और शिल्प विरासत को समझने और समर्थ बनाने मे मदद करती है। और लोगो की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करती है। उन्हे नयी प्रेरणाओ के साथ जोड कर, नये कलाकारो के उत्साह को बढावा देती है। और भारतीय कला की विविधता को भी बढावा देती है।

मधुबनी पेंटिग

भारतीय लोककला से लोगो को अपने सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक गौरव का एहसास होता है। इससे लोगो को समझ आता है कि वे अपनी समृध्दता और अव्दितीयता मे कितने महत्वपूर्ण है। और इसको संजोये रखना एक जिम्मेदारी है, जिससे आने वाले पीढी को हस्तांतरित किया जा सके। भारतीय लोक कला के कुछ प्रकार है।

1 - मधुबनी पेंन्टिग- यह बिहार राज्य की लोक कला है, जिसमे देवी- देवता विवाह समारोह उत्सव, आदि को विषय के रूप में चित्रित किया जाता है, जिसके लिए प्राकृतिक रंग और बारीक ब्रश प्रयोग किया जाता है। इसमे मिथिला क्षेत्र की सांस्कृतिक एवं धार्मिक कथाओ का सुन्दर तथा मार्मिक अंकन होता है।

2- वरली पेन्टिंग --- महाराष्ट्र की वरली जनजातीय की यह कला सफेद रंग से की जाती है, इसमे दैनिक जीवन, प्रकृति, देवी-देवताओं का चित्रण किया जाता है।

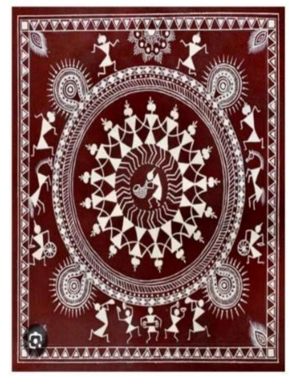

वरली पेंन्टिग

3---पट चित्र---लोक कला का यह रूप उडीसा और पश्चिम बंगाल का है, जिसमे धार्मिक कथाओ और मिथको का विस्तृत वर्णन किया जाता है।

4---फड चित्र - राजस्थान की प्रसिद्ध लोक कला है जो कपड़ो पे की जाती है। इसमे धार्मिक कथाओं और नायको की कथाओं का चित्रण किया जाता है।

फडचित्र

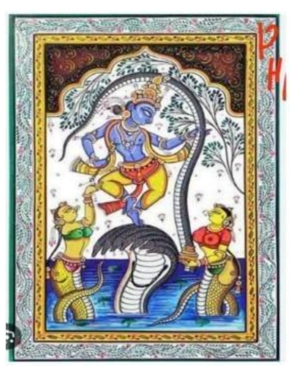

पटचित्र

जनजातीय कला-- भारतीय जनजातियो की कला के विभिन्न प्रकार है

https://kalaasamiksha.in/
Kalaa Samiksha - Volume 01, No 08, PP 273-304 Nov. 2025 (Total PP 32)
ISSN : 3107- 4936(Online)
Frequency – Monthly

गोंड आर्ट

सौरा आर्ट

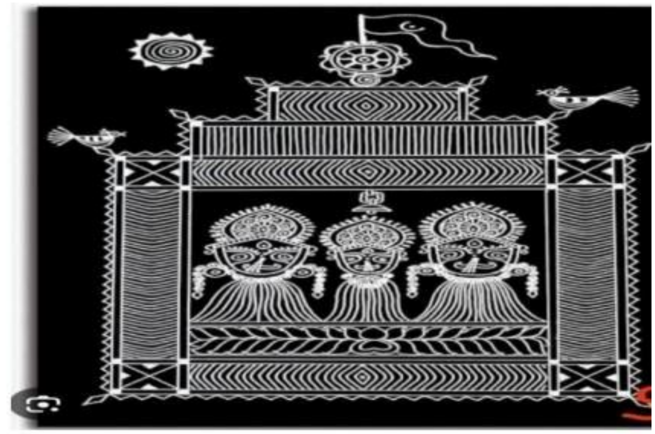

टोटेम कला

1. गोंड कला -– मध्यप्रदेश की गोंड जनजाति की यह चित्रकला रंग-बिरंगो चित्रों और ज्यामितीय पैटर्न का प्रयोग करके एक नयी कला का विकास करती है।

2. सौरा पेंन्टिंग - राजस्थान और मध्यप्रदेश के साँवरा जनजाति की यह कला देवी- देवताओं और धार्मिक मान्यताओं पर अधारित है।

3. भील आर्ट - मध्यप्रदेश गुजरात और राजस्थान की भील जनजाति की यह चित्रकला बिन्दुओं और ज्यामितीय आकृतियों का प्रयोग किया जाता है।

4. टोटेम्स-–- नागालैंण्ड और अन्य पूर्वोत्तर राज्यो की जनजातियों की यह कला लकडी पर नक्काशी करके बनाई जाती है। और इसमे धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीक होते है।

निष्कर्ष

भारतीय लोककला एवं जनजातीय कला सांस्कृतिक विरासत का स्वरूप विशाल और अत्यंत समृध्द है। यह विरासत भारतीय समाज के अगाध इतिहास विविधता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करती है।

इसमे भारत के विभिन्न क्षेत्रो और जनजातियो की भावनाओं धार्मिक अनुष्ठान, स्थानीय परंपराओ और जीवन शैली का प्रतिनिधित्व होता है। भारतीय लोककला एवं जनदातीय कला का स्वरूप विविधता और समृध्दता मे है, इसमे भावनात्मक और रागीयताओ का गहरा परिचय होता है। जो भारतीय जीवन के विभिन्न पहलुओ को दर्शाता है। यह भारतीय समुदायो के सम्बन्ध परंपराओ और जीवन शैली का महत्वपूर्ण हिस्सा है और उनकी विविधता और एकता को प्रस्तुत करता है। भारतीय लोककला मे संगीत, नृत्यकला, कथा नाट्य और शिल्पविधा जैसी विभिन्न कलाओ का समावेश होता है। यह कलायें समाज मे एकता, सहयोग और विश्वास को बढावा देती है। और सांस्कृतिक विरासत को बचाने और बढ़ावा देने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इस सांस्कृतिक विरासत का स्वरूप विविधता समृध्दता और शिक्षाप्रद है। यह भारतीय समाज के गहरी और समृध्द संगीत, नृत्य, कला और कथाओ के जीवन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। और लोगो को उनके ऐतिहासिक सांस्कृतिक और धार्मिक अधारो के साथ जोड़ती है। इन जनजातीय कला को संवर्धित करना हम सभी की जिम्मेदारी है यह कलाऐ नई पीढ़ी को अपनी जडो से जोडने का माध्यम होती है। इसके संरक्षण के लिए सरकारी गैर-सरकारी और समुदायिक स्तर पर प्रयास किये जाने चाहिए।

सहायक सन्दर्भ सूची

पुस्तक

- बोजर, अंजलि (1997), भारतीय लोक संगीत, प्रकाशक रवीश कुमार ।
- डा. भानवत, महेन्द्र (1979), संस्कृति के रंग, भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर ।।
- वात्स्यायन, कपिला (2001), भारतीय लोक नृत्य, साहित्य अकादमी ।।
- डा. वर्मा, अविनाश बहादुर, अमित, (2007), कला एवं तकनीक, प्रकाश बुक डिपो, बरेली।।
- कान्त, मीनाक्षी (2015), भारतीय कला संस्कृति एवं विरासत, एसेस पब्लिशिंग ।।
- डा. राजपुरोहित, भगवती लाल (2019), भारतीय कला और संस्कृति, शिवालिक प्रकाशन दिल्ली।।
- कुमार, अनूप (2020), इण्डियन फोक एण्ड ट्राइबल आर्ट, बी. आर. पब्लिशर ।।
- डा. श्री वास्तव, अरुण कुमार (2021), भारतीय संस्कृति एवं विज्ञान, अर्णब एंटरप्राइसेस नई दिल्ली।।
- डा. रंजन, मनीष (2023), भारतीय कला एवं संस्कृति, प्रभात प्रकाशन प्रा. लि. ।।